B.A. Part-II
Paper-III

औरंगजेब की धार्मिक नीति
(Religious Policy of Aurangzeb)

औरंगजेब ने जिन परिस्थितियों में गद्दी प्राप्त की थी, उसने धार्मिक नीति में परिवर्तन करना लाजिमी था। औरंगजेब ने शाहजहाँ के जीवन में ही उसे सत्ता से वंचित करके एक असाधारण कार्य किया था और इसका औचित्य प्रस्तुत करना अनिवार्य था। किसी शासक को उसके जीवन में दो ही परिस्थितियों में सत्ता से हटाया जा सकता था, यदि वह धर्म से विरुद्ध आचरण करे या बीमार हो और किसी कारण से प्रजा हित में कार्य करने में असमर्थ हो। औरंगजेब ने भी इसी आधार पर शाहजहाँ को सत्ता से वंचित करने का औचित्य प्रस्तुत करना चाहा।

औरंगजेब ने भी इसी आधार पर शाहजहाँ को सत्ता से वंचित करने का औचित्य प्रस्तुत करना चाहा। चूँकि उत्तराधिकार के युद्ध में उसे राजपूतों ने भी समर्थन दिया था और वह हिन्दू प्रजा को भी असंतुष्ट नहीं करना चाहता था। इसलिए उसने शाहजहाँ को विस्थापित करने के लिए उस पर अस्वस्थ और वृद्ध होने के कारण प्रशासनिक अकर्मण्यता का आरोप लगाया था और अपने शासन के आरंभ में एक सक्रिय नीति अपनायी थी उसने मराठों के विरुद्ध सैनिक अभियान चलाया और अफगानो के विद्रोह के दमन के उपाय किए। इस समय तक शाहजहाँ जीवित था और औरंगजेब ऐसा निर्णय नहीं लेना चाहता था, जो साम्राज्य में अव्यवस्थाएं फैलाए, लेकिन दुर्भाग्यवश उसकी आर्थिक

Scanned with CamScanner

आक्रामक नीति सैनिक सफलताएं द्वारा सम्पुष्ट नहीं हो सकी। उसी समय साम्राज्य के विभिन्न क्षेत्रों में विद्रोह और उपद्रव खड़े उठे, जो आर्थिक असन्तोष से प्रेरित थे। इसमें जाट एवं बुंदेला आदि के विद्रोह प्रमुख थे। चूँकि विद्रोहियों में अधिकांशतः हिन्दू प्रजा सम्मिलित थी। इसलिए औरंगजेब धीरे-धीरे हिन्दू प्रजा का दमन करने और कट्टरपंथी मुसलमानों का समर्थन प्राप्त करने के लिए प्रेरित हुआ।

स्मरणीय है कि औरंगजेब की धार्मिक नीति का विकास क्रमिक रूप से हुआ। सत्ता में आने पर उसने किसी सम्प्रदाय या धर्म का विरोध किए बिना इस्लाम के प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त करने का उपाय किया। उसने झरोखा दर्शन की पद्धति समाप्त कर दी क्योंकि इससे सम्राट-पूजा की परिपाटी विकसित होने लगी थी, उसने नौरोज का उत्सव भी समाप्त कर दिया जो पारसियों के त्योहार पर आधारित था। उसने सिक्कों पर कलमा अंकित करवाना बन्द कर दिया। उसने मुहतसिब नामक अधिकारी बहाल किए, जो मुसलमानों के नैतिक आचरण पर निगरानी रखते थे और जुआखोरी, नशाखोरी, वेश्यावृत्ति आदि को रोकते थे। अपने पिता की तरह उसने पुराने मंदिरों की रक्षा और नए मंदिरों पर प्रतिबंध की नीति अपनाई। नए मंदिरों को तुड़वाने के आदेश भी पूर्ववत बने रहे, लेकिन इतिहासकार सतीशचन्द्र के अनुसार बड़े पैमाने पर मंदिरों को

विनष्ट करने के उपाय नहीं किए गए। अतः औरंगजेब की धार्मिक नीति का आरम्भिक चरण शाहजहाँ की नीति के ही अनुरूप था। केवल शरीयत को अधिक महत्व दिया गया था।

दूसरे चरण में, अपने शासन के 11 वें वर्ष (1668 ई०) में औरंगजेब ने ऐसे निर्णय लिए जो मितव्ययिता के उद्देश्य से अनिवार्य थे क्योंकि साम्राज्य में आर्थिक संकट गम्भीर रूप धारण कर चुका था। परन्तु इन निर्णयों का औचित्य धर्म के आधार पर प्रस्तुत किया गया। औरंगजेब ने दरबारी संगीतकारों और इतिहासकारों को हटा दिया, तुला दान की प्रथा बन्द कर दी, राज दरबार में सोने चाँदी की वस्तुओं का उपयोग बन्द कर दिया। तर्क यह दिया गया कि शरीयत में अपव्यय और धन प्रदर्शन को वर्जित माना गया है। इसी समय के आस-पास औरंगजेब ने मुसलमान व्यापारियों को चुंगी देने से मुक्त कर दिया, जबकि हिन्दू व्यापारी चुंगी देते थे। उसने राजस्व विभाग के निम्न पदों से भी हिन्दू को हटाकर उनके स्थान पर मुसलमानों को भर्ती किया।

मुसलमान व्यापारी हिन्दू व्यापारियों का सामान अपने सामान के साथ मिलाकर उसे भी चुंगी से मुक्त कर देते थे। अतः औरंगजेब को अपने आदेश में संशोधन करना पड़ा। मुसलमानों को नौकरी देने का प्रयास भी बहुत सफल नहीं हो सका।

(4)

हिन्दू पाठशालाओं और त्योहारों पर प्रतिबंध लगाये गए। विद्रोहियों को दण्ड देने के क्रम में मंदिरों का भी विनाश हुआ क्योंकि औरंगजेब का विश्वास था कि मंदिर षड्यंत्र और राजद्रोह कारवाईयों के केन्द्र बन चुके थे

अनेक इतिहासकार इसके धार्मिक नीति की आलोचना करते हैं और उसे एक धर्मान्ध शासक मानते हैं। इतना ही नहीं, वे औरंगजेब की धार्मिक नीति को मुगल साम्राज्य के पतन के लिए भी उत्तरदायी मानते हैं। इनके अनुसार औरंगजेब ने अकबर की धार्मिक सहिष्णुता की नीति का परित्याग कर दिया, जिससे हिन्दू प्रजा असंतुष्ट हो गयी। इससे साम्राज्य में विद्रोह की समस्या उत्पन्न हुई और उसका पतन अवश्यंभावी हो गया।

—x—

Scanned with CamScanner